

बदलाव-एक किसान की दास्तान

बहुत हो गया, चलो अब बदले पहचाने, कौन हो तुम ?
मैं हूँ किसान ! न फ़कीर न गुलाम ।

मेरी किस्मत न कलम लिख सके, न तलवार,
मैं..खुद लिखू, हल से इसे ।

न कम किसी फ़रिश्ते से,
मैं,देता-नवजीवन,धरा की कोख में ।

न मैं कोई सिपाही,पर डटा रहु,
तपते-दिन कड़के की रातों में ।

देखो मेरा हौसला, जब देखु,
बाहें पसारे नन्हे एक बीज को।
हिम्मत-लगन से मेरी, धरती फाड़ दिखा दिया इसने॥

ये हे मेहनत खून-पसीने की,
धुलसने-पैरो फटेहुए-हाथो की,बदल गयी किस्मत जिनकी,
इन उद्धित-नवनिर्मित लकीरो से ॥

पर खुश हूँ फिर भी ,
मैं... ना डर, निडर चला
सबकी भूख मिटाने को ।

ना मिली जगह, ना हैसियत,
बदलते, इस संसार में॥

बस मिले तोह ये, चंद-भर नोट !
पर छीन लिए जाते ये भी ,
महंगाई बढ़ते-दामों से॥

बहुत हो गया, चलो अब बदले ।
पहचाने ! कौन हो तुम?

मैं हूँ किसान, हाँ मैं किसान !!!
हूँ आतुर नेताओं के,नापाक इरादों पर,
हल अपना चलाने को,बदलाव की एक अलख जगाने को॥

बस, होश संभाले रखना हैं !
हुंकार लगाए रखना हैं,जय बलराम !!!

-अजय चौधरी